International Journal of Education and Science Research Review
IJESRR
E-ISSN 2348-6457
Volume-8, Issue-6 Nov-Dec- 2021
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

समाज में मूल्यों पर आधारित शिक्षकों के पाठयक्रम का संक्षिप्त विश्लेषण

Sachchida Nand Pathak,
Research Scholar, Department of Education
, kalinga University

Dr. Aditya Prakash Saxena
, Professor, Department of Education,
kalinga University

सार–

मूल्यों के विकास में शिक्षक को समाज के लिए आदर्श माना जाता है। अध्यापक का सम्पूर्ण आचरण व व्यवहार छात्रों को अत्याधिक प्रभावित करता है। अध्यापक केवल उपदेश और प्रवचनों द्वारा मूल्य शिक्षा प्रदान करके अपने छात्रों का निर्माण नहीं कर सकता। मूल्यों पर आधरित शिक्षकों का कोई निर्धारित पाठ्यक्रम नहीं हो सकता वह अध्यापक की योग्यता व कुशलता पर निर्भर होता है। मूल्यों की शिक्षा प्रक्रिया ज्ञान से आरम्भ होती है, फिर उस ज्ञान से सम्बन्धित भावनाओं और संवेदनाओं को विकसित किया जाता है और उसे आचरण में लाने का प्रयास भी किया जाता है तभी मूल्यों की शिक्षा की पूरी प्रक्रिया का आंकलन किया जाता है।

प्रस्तावना–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य समाज की प्रथम इकाई है। मनुष्य और समाज में घनिष्ठ सम्बन्धअनिवार्य है क्योंकि उसका जन्म और पालन–पोषण समाज में व सामाजिक वातावरण में होता है। मनुष्य शिक्षित और जागरूक होकर समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाता है। अतः समाज व मनुष्य मेंआदान–प्रदान की यह प्रक्रिया अनवरत् रूप से चली आ रही है। सभ्यता संस्कृति, विज्ञान, सूचना वतकनीकी का विकास आदान–प्रदान का ही फलित रूप है।

एडिगर एण्ड रॉय (2001) के अनुसार ''सामाजिक विज्ञान में शैक्षिक अनुशासन के रूप, मूल्यों कीस्थापना पर बल दिया जाता है जिसमें सभी सामाजिक विषयों का अपना क्षेत्र एवं व्यवस्थित अध्ययनशामिल है''।

विद्यालय एक लघु सामाजिक संस्था है जिसके द्वारा मनुष्य शिक्षार्जन करके समाज की चुनौतियों का ज्ञानप्राप्त करता है तथा उसके निराकरण में भी जागरूक होकर अपना योगदान देता है। स्वतन्त्रता के पश्चात्भारत को एक सफल लोकतन्त्र बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति में लोकतान्त्रिक दृष्टिकोण तथा उत्तमनागरिकता के गुणों का विकास करना, भारत की एकता व अखण्डता को सुरक्षित रखने हेतु सामाजिक व धार्मिक विशेषताओं को पहचाना, सद्भावना, विष्व बन्धुता व विष्व शांति कायम रखना, समाज केप्रत्येक वर्ग को बराबरी का हक दिलाना आवष्यक था। इसी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर स्कूलस्तर पर एक ऐसे विषय की आवष्यकता अनुभव की गयी जिसमें मानवीय विषयों का संष्लेषण सम्भवहो और यह विषय सामाजिक अध्ययन के रूप में उदित हुआ। विद्यालय स्तर पर इसे सामाजिक विज्ञानके नाम से शामिल किया गया है।

आज निश्चित रूप से हमने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के रूप में उल्लेखनीय तरक्की की है। नवीन आविष्कारों एवं अनुसंधानों के कारण मानव जीवन में बहुत से परिवर्तन आए हैं। भौतिक सुख–सुविधा व सम्पन्नता बढ़ी है। ज्ञान के क्षेत्र में नित–नई सूचनाएं हमारे दिमाग को उद्वेलित कर रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि क्या ज्ञान प्राप्त करें ? हम थोड़े ही समय व श्रम से सब कुछ प्राप्त करने की लालसा करते हैं। जब सब प्राप्त नहीं कर पाते तो भ्रमित हो जाते हैं तथा उचित–अनुचित में भेद किये बिना ही, स्वयं को ही सही मानते हुए कार्य करते–रहते हैं। यह भी नहीं विचार करते कि इससे हमारे समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा? आज आधुनिकता की दौड़ में हम वो सब कुछ किए जा रहे हैं जो कि हमारे अस्तित्व के लिए ही घातक हैं। आज हिंसा, धार्मिक कट्टरवाद, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, स्वार्थ इस तरह से बढ़ गए हैं कि इसने हमारे सामाजिक ताने–बाने, सौहार्द, सहनशीलता, भाईचारा, सहिष्णुता, नैतिकता परोपकारिता जैसे मूल्यों को तहस–नहस कर दिया है। न केवल हमारे देश वरन् सभी देशों में यह मूल्य पतन दृष्टिगोचर होता है। यह बहुत ही चिंताजनक पहलू है कि जीवन में सामाजिक व राष्ट्रहित की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वार्थ व हित बढ़ा है। आज हमें वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ी के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता है। आज न केवल विद्यालय, परिवार, समुदाय वरन सम्पूर्ण सामाजिक ईकाईयों को एकजुट होकर मूल्यों के विकास व दैनिक जीवन में उन्हें अनुप्रयोग करने के समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता है।

आज निश्चित रूप से हमने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के रूप में उल्लेखनीय प्रगति की है। नवीन आविष्कारों एवं अनुसंधानों के कारण मानव जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं। भौतिक सुख–सुविधा व सम्पन्नता बढ़ी है। ज्ञान के क्षेत्र में नित–नई सूचनाएं हमारे मस्तिष्क को उद्वेलित कर रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि क्या ज्ञान प्राप्त करें ? क्या छोड़ें ? हम थोड़े ही समय व श्रम से सब कुछ प्राप्त करने की लालसा करते हैं। जब सब प्राप्त नहीं कर पाते तो भ्रमित हो जाते हैं तथा उचित–अनुचित में भेद किये बिना ही, स्वयं को ही सही मानते हुए कार्य करते–रहते हैं। यह भी नहीं विचार करते कि इससे हमारे समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? समाज के प्रति भी हमारे क्या उत्तरदायित्व हैं ? आज आधुनिकता की दौड़ में हम वो सब कुछ किए जा रहे हैं जो कि हमारे अस्तित्व के लिए ही घातक हैं। आज हिंसा, धार्मिक कट्टरवाद, आतंकवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, स्वार्थ इस तरह से बढ़ गए हैं कि इसने हमारे सामाजिक ताने–बाने, सौहार्द, सहनशीलता, भाईचारा, सहिष्णुता, नैतिकता परोपकारिता जैसे मूल्यों को तहस–नहस कर दिया है। न केवल हमारे देश वरन् सभी देशों में यह मूल्य पतन दृष्टिगोचर होता है। यह बहुत ही चिंताजनक पहलू है कि जीवन में सामाजिक व राष्ट्रहित की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वार्थ व हित बढ़ा है। आज हमें वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ी के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता है। मूल्य आधारित शिक्षा की व्यवस्था करने से पूर्व यह भी जानना आवश्यक है कि मूल्य क्या है? मूल्यों के विषय में विभिन्न विचारकों, दार्शनिकों, शिक्षाशास्त्रियों आदि के विचार भिन्न–भिन्न हैं।

मूल्य हमारे व्यवहार को प्रभावित करते हैं और स्वयं व्यवहार द्वारा प्रभावित भी होते हैं। मूल्य शब्द का प्रयोग व्यक्ति की पसंद– नापसंद अथवा प्राथमिकताओं के निर्धारण के लिए किया जाता है। गार्डन आलपोर्ट के अनुसार, ''मूल्य वे विश्वास हैं जिन पर व्यक्ति प्राथमिकता से कार्य करता है।'' ननली के विचार में, ''मूल्य जीवन के लक्ष्यों तथा जीवन शैली से संबंधित होते हैं।'' फिलंक ने मूल्यों की अनेक परिभाषाओं का अध्ययन

करने के बाद कहा कि ''मूल्य वे मानक हैं जो कार्य करने के विभिन्न विकल्पों में व्यक्ति के चयन को प्रभावित करते हैं।'' मूल्य वे निर्देश, आदर्श, मानक, मानदंड और सिद्धांत हैं जो मनुष्य को किसी महत्तर उद्देश्य या लक्ष्य के प्रति उन्मुख होने के लिए प्रेरित एवं दिशा–निर्देशित करते हैं। जब कोई कार्य इसलिए किया जाता है क्योंकि वह किया जाना चाहिए और उस कार्य के प्रतिफल के रूप में कोई व्यक्तिगत स्वार्थ या लाभ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निहित नहीं रहता, तब उस कार्य को नैतिक कार्य की श्रेणी में रख सकते हैं क्योंकि तब इस कार्य में नैतिक मूल्य निहित होता है।

'मूल्य' उन सभी तत्वों को अपने में समाहित किए हुए हैं जो व्यक्ति विशेष के शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक सवंर्धन के लिए महत्वपूर्ण होते हैं तथा ये तत्व अपने मूल रूप में ही इच्छित तथा उपादेय समझते जाते हैं। आज समाज में हमें मूल्यों की गिरावट दिखाई पड़ती है, समाज में घटने वाली सभी घटनाओं का सरोकार किसी न किसी हद तक मूल्यों से रहता है। ये घटनाएं या तो मूल्योन्मुखी होती हैं या मूल्यों से परे या कहीं इनके बीच में। यदि घटनाएं अच्छी हों तथा व्यक्ति विशेष व समाज की इच्छाओं के अनुरूप हों तो उन्हें सापेक्षतया मूल्यपरक कहा जाता है। खेद का विषय है कि हमारे शैक्षिक संस्थान कुशल व्यक्तियों का निर्माण तो कर रहे हैं, परन्तु अच्छे नागरिकों या मानवों का निर्माण नहीं। वर्तमान शैक्षिक संस्थानों को मानव जीवन में मूल्यों को विकसित करने वाला होना चाहिये। मानवीय मूल्यों में ह्रास के कारण आज हम विभिन्न प्रकार के कष्टों और दुःखों का सामना कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा अपने उद्देश्यों को पूरा करने में असमर्थ हो गयी है। वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के अस्तित्व के लिए एवं उनके कल्याण के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

भारतीय समाज में नैतिक एवं नैतिक मूल्यों का तेजी से क्षरण हुआ है। हालाँकि आज़ादी से पहले हमारे पास एक चीज़ थी जिसे अब हमने काफी हद तक खो दिया है और वह है चरित्र पर गर्व और नैतिक और नैतिक मूल्यों के प्रति हमारी सूझबूझ। राज्य को पूर्ण विश्वास था कि स्वतंत्रता प्राप्त कर हम नैतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति के आधार पर चमत्कार कर सकेंगे। निःसंदेह स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश ने सभी क्षेत्रों में तेजी से विस्तार किया लेकिन हमने अपना चरित्र और अपने मूल्यों पर गौरव खो दिया। यह ठीक ही कहा गया है कि 'यदि धन खो गया, तो कुछ भी नहीं खोया, यदि चरित्र खो गया, तो सब कुछ खो गया' यह न केवल व्यक्ति के लिए, बल्कि राष्ट्र के सही मार्ग के लिए भी सत्य है। इसलिए हम मनुष्य को सही रास्ते पर ले जाने, सार्वभौमिक भाईचारा पैदा करने और सत्य, अच्छाई और सुंदरता के पूर्ण मूल्यों को प्राप्त करने के लिए मूल्यों की आवश्यकता का सारांश दे सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता लोगों को सच्चे अर्थों में अच्छा इंसान बनाने के लिए सत्य, धार्मिकता, शांति, प्रेम और अहिंसा जैसे सभी पांच मूल मूल्यों को विकसित करना है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

अनीता पठानिया (2014) ने गुणवत्ता संवर्धन और मूल्य शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन किया। अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष बताए गए। बड़ी संख्या में उत्तरदाता इस बात से कुछ हद तक सहमत थे कि शैक्षिक मूल्य प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों में धार्मिक और आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ाई जानी चाहिए, जो कि 55.88 प्रतिशत है, जबकि 23.53 प्रतिशत इससे सहमत नहीं हैं। बिल्कुल भी। शेष 20.59

प्रतिशत ने काफी हद तक इसे पक्ष में माना। इस प्रकार, उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा में लगे विद्यार्थियों में शैक्षिक मूल्यों को विकसित करने में धार्मिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली के सामने सबसे बड़ी चुनौती व्यक्ति के सामाजिक और नैतिक मूल्यों और चरित्र के संकट से निपटना है। जब साक्षात्कार लिया गया तो प्रतिभागियों ने कहा कि यद्यपि भारत हमेशा अच्छे सामाजिक मूल्यों और अपने लोगों के चरित्र के लिए जाना जाता है, लेकिन पश्चिमी मूल्यों के प्रभाव ने उन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है, जिसे केवल हमारी मूल्य उन्मुख शैक्षिक प्रणाली को आत्मसात करके ही ठीक किया जा सकता है, जो है– बेशक एक बड़ी चुनौती. चुनौती का मुकाबला सामूहिक आत्ममंथन से करना होगा। शिक्षा प्रणाली के घटकों के संपूर्ण पहलू की समीक्षा की जानी चाहिए ताकि मूल्य शिक्षा के लिए जगह बनाई जा सके। इसके अलावा, प्रतिभागियों ने स्वीकार किया कि संयुक्त परिवार प्रणाली मूल्यों को बढ़ावा देने में काफी हद तक योगदान करती है।

निताशा (2013) ने लिंग और स्कूल प्रबंधन शैली में स्कूल शिक्षकों के बीच मूल्यों का अध्ययन किया। यह अध्ययन हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षुओं के बीच पर्यावरण जागरूकता और मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन पर आयोजित किया गया था। यह अध्ययन कांगड़ा जिले के सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ाने वाले 100 पुरुष और महिला शिक्षकों पर किया गया था। यह देखा गया कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाने वाले स्कूली शिक्षकों के मूल्यों में कोई अंतर नहीं है। और छह मूल्यों वाले क्षेत्रों पर निजी स्कूल। निष्कर्ष यह है कि महिलाओं के मामले में आर्थिक मूल्य का औसत (89.35) पुरुषों के आर्थिक मूल्य के औसत (87.63) से अधिक है। पुरुषों के लिए सैद्धांतिक मूल्य का औसत (88.73) महिलाओं के लिए सैद्धांतिक मूल्य के औसत (84.86) से अधिक है। इस प्रकार उपरोक्त मूल्य के संबंध में, पुरुष महिला शिक्षक से बेहतर हैं। पुरुषों में उच्च माध्य सामाजिक मूल्य (89.09) के लिए है। महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष अधिक सामाजिक होते हैं। वे दूसरों के कल्याण में गहरी रुचि रखते हैं। सरकारी स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों के सौंदर्य मूल्य का औसत (89.85) निजी (स्ववित्तपोषित) स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों के सौंदर्य मूल्य के औसत (89.39) से अधिक है। लेकिन सौंदर्य मूल्य के दोनों साधनों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं है। हम कह सकते हैं कि सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षक दोनों एक ही हद तक सौंदर्य मूल्य को प्राथमिकता देते हैं।

विश्वनाथप्पा (2012) ने डी.एड और बी.एड छात्रों में आईसीटी के माध्यम से मूल्यों के विकास का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चलता है कि मूल्यों को विकसित करने में डी.एड और बी.एड छात्रों के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। ग्रामीण छात्रों, महिला छात्रों और सरकारी संस्थानों के छात्रों को उनके निजी समकक्षों की तुलना में अनुकूल मूल्यों के साथ सूचित किया गया।

राकेशराय और अनिताराय (2012) ने एनसीआर में निजी और सरकारी विश्वविद्यालयों में कार्यरत तकनीकी शिक्षकों के बीच मूल्यों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में शोधकर्ता ने संग्रह डेटा और व्याख्या परिणाम के लिए डॉ. डॉ अहलूवालिया द्वारा शिक्षक मूल्य सूची का उपयोग किया। यह अध्ययन सरकारी विश्वविद्यालयों में काम करने वाले टी फर्स्ट तकनीकी शिक्षक और निजी विश्वविद्यालयों में काम करने वाले तकनीकी शिक्षकों के दो समूहों तक सीमित था। कुल नमूने में 130 तकनीकी शिक्षक शामिल थे। 150 का. यह पाया गया कि

सैद्धांतिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्यों के संबंध में तकनीकी शिक्षकों के बीच कोई अंतर नहीं था। लेकिन सरकारी और निजी तकनीकी शिक्षकों में सौंदर्य, राजनीतिक और आर्थिक के संबंध में कुछ मतभेद हैं। शिक्षा का मूल उद्देश्य हमारी गौरवशाली राष्ट्रीय विरासत और मानव सभ्यता की उपलब्धियों के बारे में कौशल और ज्ञान और जागरूकता पैदा करना है, एक बुनियादी वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखना है और देशभक्ति, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और शांति के आदर्शों और हमारे संविधान की प्रस्तावना में प्रतिपादित सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता। मूल्य शिक्षा सैद्धांतिक और व्यावहारिक विचार, सामाजिक–भावनात्मक विकास व विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में शिक्षा, शैक्षिक कार्यक्रमों को लागू करना और उनका मूल्यांकन करना। इस पेपर में मैंने तकनीकी शिक्षकों के लिए मूल्यों के कई पहलुओं पर चर्चा की है और पाया है कि मूल्यों को सामग्री, पर्यावरण, शिक्षकों और परिवार के साथ भी शामिल किया जाना चाहिए।

मूल्यों पर आधरित शिक्षकों का पाठ्यक्रम :

मूल्य शिक्षा का कोई निर्धारित पाठ्यक्रम नहीं होता। वह तो अध्यापक की योगयता व कुशलता पर निर्भर होता है। सुयोग्य अध्यापक जानता है कि छात्रों का चरित्र उनन्त बनाने के लिए उसे क्या करना होगा। वह उनके लिए ऐसे परिवेश और परिस्थितियों का निर्माण करता है, जिनमें छात्रों के सम्मुख कुछ कसौटियाँ आती हैं, जिनके द्वारा छात्रों की चारित्रिक परीक्षा होती है जहाँ कहीं छात्रा चूकता है वहाँ शिक्षक उसे संभालता है और उन्मार्ग पर जाने से बचाकर संमार्ग पर लाता है। अतः असाधरण अध्यापक जानता है कि मूल्य–शिक्षा का वास्तविक पाठ्यक्रम क्या होना चाहिए, परन्तु साधरण अध्यापकों के लिए मूल्य शिक्षा का एक सामान्य पाठ्यक्रम होना आवश्यक है ऐसे पाठ्यक्रम में मानवता के कल्याण के लिए जो भी आवश्यक गुण अपेक्षित हैं, उनका समावेश होना चाहिए ''वसुध्ंव कुटुम्बकम्'' का भाव उसमें प्रमुख होना चाहिए। देश–प्रेम और विश्व–प्रेम में किसी प्रकार का विरोध नहीं होना चाहिए।

मूल्यों पर आधरित आंकलन व मापन

आज उस विवेक की विशेष आवश्यकता है जो मनुष्य में ऐसी क्षमता का विकास कर सके, जो वैज्ञानिक उपलब्धियों का समुचित प्रयोग कर सकें। शिक्षा की प्रक्रिया का आंकलन विद्यालय में ही शिक्षक द्वारा किया जाता है। उसमें विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम तथा पाठ्यसहगामी क्रियाओं की व्यवस्था की जाती है जिसके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास किया जाता है मूल्यों की शिक्षा प्रक्रिया ज्ञान से आरम्भ होती है फिर उस ज्ञान से सम्बन्धित भावनाओं तथा संवेदनाओं को विकसित किया जाता है और उसको आचरण में लाने का प्रयास भी किया जाता है, तभी मूल्यों की शिक्षा की पूरी प्रक्रिया का आंकलन किया जाना सम्भव है। उपलब्धियों के लक्ष्यों को आमतौर पर बयान के रूप में तैयार किया जा रहा है और यह एक चिंता का विषय है कि छात्रा अपने मूल्यों और व्यवहार को कक्षा में कैसे पेश कर रहे हैं यदि छात्रों के मूल्य व व्यवहार में परिवर्तन नहीं हो रहा है तो ये उपलब्धि के बयान में शामिल नहीं है।

अंग्रेजी पाठ्यक्रम एक ग्रंथों की श्रृंखला को उपलब्धि के समक्ष प्रदान करता है इसमें साहित्यिक ग्रंथों का भी समावेश है जिसमें चारों लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। बोलने और सुनने, पढ़ने और लिखने। उपलब्धि के स्तर में मानकों का विशेष ध्यान रखा जाता है। मानकों का विशेष ध्यान साहित्य पढ़ने के क्षेत्र में विभिन्न शैलियों के बीच भेद में, पढ़ने की क्षमता और कौशल का उपयोग कर एक पाठ पढ़ने का विकास, छात्रों की इच्छा का

मूल्यांकन नार्वे के पाठ्व्रफम परिणामों पर केंद्रित है। उपलब्धि के सभी क्षेत्रों में स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर अध्कि ज्ञान बढ़ाने पर जोर दिया जाना आवश्यक है। परिणामों के संदर्भ में यह अपेक्षा की जाती है कि शोधार्थी साहित्यिक ग्रंथों को खुद लिखने में सक्षम हो। सबसे विविध आंकलन तुलनात्मक विश्लेषण में पता लगाया गया है। कई प्रसांगिक मतभेद मूल्यांकन में पाए गए हैं। ग्रेट ब्रिटेन में मूल्यांकन के दो परिप्रेक्ष्य हैं– 1. शिक्षक मूल्यांकन 2. शोधार्थी मूल्यांकन।

यह शैक्षिक प्रक्रिया की गुणवत्ता को बढ़ाने का एक उत्तम साधन है। राष्ट्रीय परीक्षण अलग–अलग तरीकों से साहित्य में शामिल किया गया है। ग्रंथों की लिखित परीक्षा से हम योग्यताओं का आंकलन करने में सक्षम होते हैं, जैसे लिखित परीक्षा का लक्ष्य है लिखने की क्षमता का होना जिसमें निबन्ध लेखन आदि का कार्य शामिल होता है।

इस प्रकार के लक्ष्यों का उद्देश्य है कि योग्यताओं का मूल्यांकन करना जैसे पढ़ने की योग्यता के साथ साहित्यिक क्षमता, सांस्कृतिक क्षमता, पढ़ने की क्षमता और साथ ही ग्रंथों के बारे में लिखने की क्षमता होनी चाहिए। मूल्य शिक्षा में परीक्षण परिणाम व जीवन परिणाम दोनों सम्मिलित है। ज्ञान प्राप्त करना परिक्षण परिणाम है जबकि इसका उपयोग करना अधिकतर एक जीवन परिणाम है। किन मूल्यों को उच्च श्रेणी में रखे और किन को निम्न श्रेणी में यह विभिन्न विषयों के स्त्रोंतो से इनका मापन किया जा सकता है। विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि सब हमें मूल्यों के सम्बन्ध में जानकारी देते हैं और यह भी स्पष्ट करते हैं कि वांछित–आंवांछित एवं उच्च–निम्न श्रेणियों में किन मूल्यों में रख सकते हैं।

निष्कर्ष–

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आज हमारा समाज मूल्य–संकट के दौर से गुजर रहा है। इस संकट को दूर करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। बालकों में मूल्यों का विकास आज समय की सबसे बड़ी चुनौती व आवश्यकता है। परिवार, विद्यालय, समुदाय, सामाजिक संगठनों व सरकार आदि सभी को नियोजित व समन्वित प्रयासों के द्वारा मूल्यों का विकास करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ–

- एम0 एल0 मित्तलः शिक्षा सिद्धांत, लॉयल बुक डिपो मेरठ, संस्करण–2016
- एम0के0 सिंह, ''शिक्षा तथा भारतीय समाज,'' लॉयल बुक डिपो, मेरठ, 2003.
- के0 चमोला, ''मूल्यः अर्थ तथा अवधारणा,'' भारतीय आधुनिक शिक्षा, अप्रैल, 2004.
- प्रो0एम0एल0 मित्तलः वीरेन्द्र शर्मा, डॉ0 हरेन्द्र सिंह, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउफस मेरठ, पृष्ठ संख्या 108, संस्करण–2010।
- डॉ0 एस0 एस0 माथुरः शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, विनोद पुस्तक आगरा, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ संख्या 217, 2018।
- डॉ0 आर0 ए0 शर्माः आर.लाल बुक डिपो मेरठ, संस्करण–2008, पृष्ठ संख्या 249, 2017।

- उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षकः शिखा चतुर्वेदी, एन.आर. स्वरूप सक्सैना, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2018
- आनंद, एस.पी. (1994)। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी–एड) के संगठनात्मक माहौल का विश्लेषण। शिक्षा में रुझान और विचार, वॉल्यूम। ग्यारहवीं, 80–89. आनंद, एस.पी. (1996), इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, नवंबर अंक, नई दिल्लीः हिल पब्लिकेशन।
- एंजेनेंट, एच. एंड मैन, ए. (1989)ः डच प्रथम ग्रेडर में बुद्धिमत्ता, लिंग, सामाजिक परिपक्वता और सामाजिक तत्परता। सामाजिक व्यवहार एवं व्यक्तित्वः एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 17(1), 205।
- अरोड़ा, के.एल. (1986). एजुकेशन इन द इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी, लुधियाना, प्रकाश ब्रदर्स।
- अरोरा, के. (1978), प्रभावी और अप्रभावी शिक्षकों के बीच अंतर, नई दिल्लीः एस. चंद एंड कंपनी लिमिटेड।